संपादकीय

संस्थान की हिन्दी की वार्षिक पत्रिका 'प्रवाहिनी' का यह दशम् अंक आपके समक्ष प्रस्तुत कर हमें अत्यन्त हर्ष हो रहा है । संस्थान इस वर्ष अपने स्थापना की 25वीं वर्ष गाँठ मनाने के कारण यह वर्ष अपने में बहुत महत्वपूर्ण है । जलविज्ञान की दृष्टि से भी यह वर्ष अपना अलग ही स्थान रखता है क्योंकि पूरे विश्व ने इस वर्ष को 'विश्व स्वच्छ-जल वर्ष' के रुप में मनाने का निश्चय किया है । अतः संस्थान द्वारा हिन्दी सप्ताह के दौरान हिन्दी के अनेकों कार्यक्रम आयोजित किए गए, जो वस्तुतः संस्थान के वैज्ञानिकों, अधिकारियों, कर्मचारियों तथा उनके परिवार के हिन्दी प्रेम, विचारों की अभिव्यक्ति, लेखन क्षमता एवं दक्षता आदि के नैसर्गिक प्रवाह को दर्शाता है ।

विगत लगभग दो दशकों के दौरान हम अपने देश के विभिन्न क्षेत्रों में हुए हिन्दी प्रयोग तथा विकास से काफी खुशी है । हमारा ऐसा विश्वास है कि अब शायद यह विश्व की सबसे अधिक बोली जाने वाली दूसरी भाषा के रुप में प्रतिष्ठित हो चुकी है । हिन्दी का दिनों दिन बढ़ता प्रयोग इस बात का स्वमेंव प्रमाण है कि अब इसे किसी बैसाखी की आवश्यकता नहीं है । इसका श्रेय उन मनीषियों और भाषाविदों को जाता है, जिन्होंने इसके प्रयोग तथा अनुपालना को सरलता प्रदान की । इसके अनुप्रयोग में दबाव रहित मात्र आत्मविश्वास का सौहार्दपूर्ण रुख अपनाया और आज़ हर भारतीय इसे मन से आत्मसात कर रहा है । क्योंकि वह जानता है कि यह भारत ही नहीं अपितु अनेक अन्य देशों जैसे- मारिशस, सूरीनाम, टोबैगो, ट्रिनीडाड आदि में काफ़ी विकसित व प्रचलित है । ग्लोबलाईजेशन के मुहिम के कारण नवीन चेतना का प्रादुर्भाव हुआ है तथा विश्व परिदृश्य काफ़ी तेजी से बदल रहा है । विकास के इस नवीन दौर में नये आयाम तलाशे जा रहे हैं । अतः विश्व की अनेक बहुराष्ट्रीय कम्पनियों ने सम्पर्क सूत्र के रुप में इसके महत्व को समझकर इसे और अधिक समुन्नत बनाने का बीड़ा उठाया हुआ है । फ़लतः सूचना, प्रौद्योगिकी तथा कम्प्यूटर के क्षेत्रों में हिन्दी का प्रयोग बढ़ा है । देश के किसी कोने में आज कहीं चले जाइए, यदि आप हिन्दी से रुबरू हैं तो बस आपकी चाँदी है । इसका मुख्य कारण यह है कि आज देश का बच्चा-बच्चा हिन्दी जानने के प्रति सजग है उसको सीखने में उसकी जिज्ञासा बढ़ी है ।

आज़ हिन्दी को विश्वस्तर पर पहचान मिली है और विभिन्न स्तरों पर अनेकों प्रयास किए जा रहे हैं । राष्ट्र संघ में भी इसे उचित स्थान दिलाने के प्रयास किए जा रहे हैं । इस क्रम में 7वाँ विश्व हिन्दी सम्मेलन 5 से 9 जून, 2003 तक कैरेबियन घाटी के 'सूरीनाम' नामक देश में आयोजित हुआ । इस सम्मेलन के लिए माननीय विदेश राज्य मंत्री श्री दिग्विजय सिंह जी ने पूर्व अपेक्षित अवधारणा के अनुकूल दिनांक 18-2-2003 को www.*vishwahindisammelan.nic.in* नामक वेबसाईट लांच की, जिस पर सम्मेलन से संबंधित समस्त वांक्षित सूचनाएं पहले से ही उपलब्ध थी । अब तक कुल छः 'विश्व हिन्दी सम्मेलन' क्रमशः नागपुर (भारत), पोर्ट लुईस (मारिशस), नई-दिल्ली (भारत), पोर्ट आफ़ स्पेन (ट्रिनीडाड तथा टोबैगो) और इंग्लैण्ड के लंदन नामक स्थानों में आयोजित हो चुके हैं परन्तु यह पहला अवसर था जब हिन्दी के प्रचार-प्रसार के लिए आधुनिक संचार तकनीक का खुलकर प्रयोग किया गया । उपरोक्त वेबसाईट पर इस कान्फ्रेंस से संबंधित समस्त सूचनाएं सुलभ थीं । देश-विदेश, केन्द्र तथा राज्य स्तर पर हिन्दी को राष्ट्र और राज भाषा के रुप में प्रतिष्ठित करने के जो प्रयास चल रहे हैं उससे लगता है कि अब वह दिन बहुत दूर नहीं जब तमिलनाडु और पांडिचेरी सरीखे भारतीय भू-भाग से भी हिंदी स्वर मुखरित होगा ।

इस प्रस्तुत अंक में पृथ्वी एक झलक, संस्थान द्वारा किए जा रहे ग्लैशियर अध्ययन, भारतीय नदियों के ड्रेनेज़ पैटर्न, सूचना संसार, अद्यतन बहुचर्चित रोग 'मधुमेंह', प्राकृतिक आपदाओं की तथ्यपूर्ण जानकारी के अतिरिक्त सामान्य अभिरुचि के अनेकों लेख जैसे 'प्रेम होने दो, क्या सही क्या गलत, हिन्दी बोलने और लिखने में गर्व महसूस करें, सांप्रदायिकता, कल के लिए मत छोड़ो, के अतिरिक्त कविताओं के संग्रहों में बच्चों की मौलिक और अनूठी कृतियों की प्रस्तुति सराहनीय कदम है । ऐसा हमारा विश्वास है कि यह अंक पाठकगणों को खूब पसंद आएगा ।

- मुख्य संपादक